अक्रम यूथ

जनवरी २०१७ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹२

आड़ाई

Dada's Youth Network

Contents

०४ इसे कहते हैं आड़ाई

०६ लोग जैसा देखते हैं, वैसा सीखते हैं

०८ सरप्राइज़

१० अनुभव से गढ़न

१२ बाहुबली

१४ दादा श्री के पुस्तक की झांकी

१६ एक प्रयोग

१८ आड़ाई की व्याख्या

२० चलो खेलें...

२२ विविध परिस्थितियों में होने वाली आड़ाई

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ४, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ४५
जनवरी २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr. RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

ऑनलाइन सबस्क्राइब करने के लिए...
store.dadabhagwan.org/akram-youth

You need to download
QR Code Scanner App
from Play store
or iTunes Store

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

Visit http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth

संपादकीय

सीधा और सरल, जो सीधा और सरल होगा मोक्ष तो उसे ही मिलेगा। ज्ञानीपुरुष तो कहते हैं कि मोक्ष जाने में आड़ाइयाँ (अहंकार का टेढ़ापन) ही बाधक हैं अगर सीधे रहेंगे तो परमात्मपद प्राप्त होगा। लोगों से मार खाकर सीधे होने के बजाय खुद समझकर सीधा होने में क्या बुराई है?

खुद की आड़ाइयों को स्वीकार करने से वे चली जाएँगी और अस्वीकार करने से और भी मज़बूत बनेगी। आड़ाइयों को देखे,जाने और कबूल कर लें तभी आड़ाई पर जीत होगी।

दिल में ठंडक हो जाए ऐसी सच्ची बात का भी स्वीकार न करे, वही आड़ाई का स्वरूप है। ऐसे लोग अपने मत के अनुसार ही बर्तते हैं। जो ज्ञानी के मत के अनुसार चलेगा उसकी आड़ाइयाँ खत्म हो जाएँगी।

मोक्षमार्ग के सफर में प्रकृति के टॉपमोस्ट गुण उपयोगी हैं। जैसे कि अत्यंत नम्रता, अत्यंत सरलता, सहज क्षमा, आड़ाई तो नाममात्र की भी नहीं होती, ऐसे गुण प्रगति का प्रमाण कहे जा सकते हैं।

अपनी मनमानी दूसरे से करवाने जाएँगे तो आड़ाई खड़ी (उत्पन्न) होगी और पराए की मनमानी के अनुसार करने से आड़ाइयाँ खत्म होती जाएँगी।

तो चलिए, इस अंक में आड़ाई का स्वरूप, कहाँ-कहाँ हम आड़ाई करते हैं, आड़ाई से किस तरह छूट सकते हैं? ये सब समझकर सरलता की ओर का रास्ता पकड़ें।

- डिम्पल मेहता

इसे कहते हैं आड़ाई

१) दिल में ठंडक हो जाए ऐसी बात हो फिर भी स्वीकार नहीं करता। अपने मत के अनुसार ही चलता है।
"मम्मी-पापा आप मेरी बर्थ डे पार्टी के लिए सभी को घर पर क्यों बुला रहे हैं? पार्टी तो रेस्टोरेन्ट में रखनी है।" "देखो, शशांक रेस्टोरेन्ट में कुछ देर तक ही बैठ सकते हैं, जबकि घर पर शांति से ज्यादा समय तक पार्टी कर सकते हैं, गेम्स खेल सकते हैं। बेटा, घर को सुंदर सजाएँगे।" शशांक को पापा की बात तो अच्छी लगी। फिर भी पापा से कहता है कि "लेकिन सारे दोस्त बाहर ही पार्टी रखते हैं तो हम घर पर क्यों रखें? चाहे जो भी हो, पार्टी तो रेस्टोरेन्ट में ही रखेंगे, वर्ना पार्टी केन्सल"।

२) आड़ाई को वास्तव में अहंकार माना जाता है। वह अहंकार का ही अंकुर है। अहंकार यानी क्या? भगवान से दूर भागना, वह। जैसे-जैसे अहंकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे आड़ाई, मान, गर्व, घमंड शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
"कमल के माता-पिता दिन-रात मज़दूरी करके कमल को शहर की अच्छी स्कूल में दाखिला दिलवाते हैं। कुछ समय के बाद कमल अपने माता-पिता को स्कूल में आने के लिए मना कर देता है। बात-बात में उनकी बेइज्जती करना, डाँटना, उसकी आदत बन जाती है।"

३) रुठ जाना, वह आड़ाई का ही एक प्रकार है। ज़रा सा बुरा लगा कि टेढ़ापन करता है।
“अंबालाल (दादा श्री) जब छोटे थे तब उन्होंने ज़िद की कि उनकी माँ, भाभी को उनसे कम दूध दें या अंबालाल को भाभी से ज्यादा दूध दें, लेकिन माँ ने बात नहीं मानी और अंबालाल रुठकर कमरे में चले गए। माँ उन्हें मनाने नहीं गई। थोड़ी ही देर में अंबालाल को चटपटी होने लगी। उन्होंने रुठकर सभी से हँसना-बोलना, खेलना, स्कूल जाना सबकुछ गँवाया।”

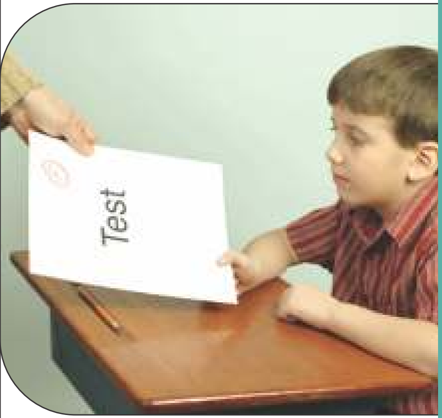

४) सामने वाले से मनमानी करवाने में तो खुद को तकलीफ होती है और सामने वाले को भी तकलीफ देते हैं।
विनय की परीक्षा करीब थी, “उसने साइकिल लेने की ज़िद पकड़ी और जब तक साइकिल नहीं मिलेगी तब तक पढ़ाई नहीं करूँगा, ऐसी ज़िद पकड़ी। बात-बात में मनमानी करने की उसकी यह आदत मम्मी-पापा को पसंद नहीं थीं इसलिए इस बार उन्होंने उसकी एक न सुनी और साइकिल नहीं दिलवाई। विनय ने पढ़ाई नहीं की, परीक्षा में फेल हो गया। मम्मी-पप्पा को बहुत दुःख हुआ। विनय को साइकिल भी नहीं मिली और ना ही वह पास हुआ।”

५) भूल का पता हो और छिपाए वह सब से बड़ी आड़ाई है।
तपन और गौतम को कॉलेज जाने में देर हो रही थी इसलिए तपन ने गाड़ी वन वे में घुसा दी। ट्रैफिक पुलिस के पकड़ने पर अपने पुलिस कमिश्नर पिता की धमकी देकर उसे चूप करा दिया। तभी उसके दोस्त गौतम ने कहा, “अरे यार, गलती तो हमारी थी और तूने उस बेचारे को धमकाया”। तपन ने हँसकर कहा, “हाँ भई, गलती तो हमारी ही लेकिन कबूल करने से सामने वाला सिर पर चढ़ जाता है। तूने सुना नहीं है क्या, “झुकती है दुनिया झुकाने वाला चाहिए“। हाँ...हाँ...हाँ...झ्र

लोग जैसा देखते हैं, वैसा सीखते हैं

http://tinyurl.com/peoplesee

इस विडियो में ऐसा है कि, जैसे उदाहरण हम दूसरों को देंगे वैसा हमारा भविष्य बनेगा। जैसे उदाहरण बुजुर्ग देंगे, वैसा ही बच्चे सीखेंगे।

यह ज्ञान सच्ची शक्ति है, लेकिन क्या हम उसका अच्छे-बुरे में इस्तेमाल करते हैं?

"बच्चे कुछ नया करने का प्रयास करते हैं। निष्फल होकर या किसी के कहने के मुताबिक या कोई ऐसा नया वर्तन जिसका परिणाम अच्छा आया हो, वैसे वर्तन की नकल करके। इस संदर्भ की सरल लेकिन मुख्य बात यह है कि बच्चे कुछ जानने के बजाय कुछ करना चाहते हैं। अन्य शब्दों में, कुछ करने से ही वे सीखते हैं।"

- डॉ.रोजर स्चेंक

"हमारे रोल मॉडल्स का हमारे वर्तन पर पड़ने वाला प्रभाव।" खास करके मनोचिकित्सकों के लिए यह विषय रुचिकर बन सकता है। ज्यादा विस्तार से देखने के लिए चलिए, आक्रमण की नकल पर एक रिसर्च सोशल लर्निंग थियरी (SLT) देखें।

बच्चें अपना वर्तन, उनके आसपास जो हो रहा है उसे देखकर, उसकी नकल करके करते हैं :

जैसे कि फोन पर बात करते देखकर, बुजुर्गों के साथ व्यवहार... धूम्रपान, हिंसा आदि इसलिए बच्चों पर अच्छी छाप पड़े ऐसा वर्तन करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके पीछे बहुत सी मानसिकताएँ हैं, और वे आड़ाई के साथ संलग्न हो सकती हैं।

SLT स्पष्ट दिखाते हैं कि व्यक्ति अपने रोल मॉडल की नकल करता है, और यदि अपने ऐसे वर्तन को प्रोत्साहन मिले तो ऐसा ही वर्तन ज़ारी रखते हैं।

SLT के इस संशोधन को, "आड़ाई" के लिए देखें तो, गुनाह वह आनुवंशिकता, जनीन, ज्ञानतंतु या ऐसी बातों पर आधारित है, ऐसी उलझन वाली दलीलों को हम नज़र अंदाज़ कर सकते हैं। - यह अपने रोल मॉडल्स की नकल करके किया हुआ वर्तन है। जब कोई व्यक्ति, अपने रोल मॉडल को कोई ऐसा वर्तन करता हुआ देखता है कि जिसका पॉज़िटिव प्रतिसाद मिलता है, तो उसे वह वर्तन याद रह जाता है। उसे अगर ऐसा वर्तन

करने का मौका मिलेगा तो वह वैसा वर्तन करेगा ही। उन्हें अगर ऐसे वर्तन के लिए प्रोत्साहन मिलेगा तो ऐसा ही वर्तन बार-बार करने की संभावना बढ़ेगी।

ऊपर के प्रयोग पर से हम अवश्य कह सकते हैं कि हम सब अपने वर्तन, अपने रोल मॉडल्स से सीखे हैं। साधारण तौर पर, बच्चा अपने माता-पिता और शिक्षकों को रोल मॉडल मानता है। इस प्रकार, अगर हम अपने बच्चों के वर्तन में सुधार चाहते हैं तो सर्व प्रथम चलिए, हम अपना वर्तन सुधारें। जैसे दादा श्री ने कहा है - "माँ मूली, बाप गाज़र, बच्चे सेब कहाँ से होंगे?"

आगे, चलो दादा श्री के साथ हुआ यह संवाद देखें...

धर्म शीखवाडे, धर्म स्वरूप जे थाय;
बापनुं जोईने छोकरांथी सीखाय!

(धर्म सीखाए, धर्म स्वरूप जो बनेगा,
बाप का देखकर, बेटा सीखेगा।)

प्रश्नकर्ता *: बच्चों को धर्म का ज्ञान कैसे दें?*

दादाश्री *: हम धर्मिष्ठ बन जाएँ तो वे भी बनेंगे। हम में जैसे गुण होंगे वैसे बच्चे सीखेंगे। यानी हमें ही धर्मिष्ठ बन जाना है। हमारा देख-देखकर सीखेंगे। हम अगर सिगरेट पीते हैं तो सिगरेट पीना सीखेंगे, हम शराब पीते हैं तो शराब पीना सीखेंगे। मांसाहार करते हैं तो मांसाहार करना सीखेंगे। जैसा करते हैं, वैसा वे भी सीखते हैं। ऐसा कहते हैं कि बाप से भी बढ़कर बनूँगा। बेटे की क्या इच्छा होती है?*

प्रश्नकर्ता *: बाप से बढ़कर बनूँगा।*

दादाश्री *: मेरे फादर से बढ़कर बनूँ तो बात बनेगी। वह शराब पीने में भी और मांसाहार करने में भी बढ़-चढ़कर होता है। यानी हम जैसा करते हैं वैसा वह भी करेगा। बच्चों को सुधारने की बहुत इच्छा है, है न? आप मांसाहार करते हैं? शराब-बराब पीते हैं?*

प्रश्नकर्ता *: नहीं।*

दादाश्री *: तो हर्ज नहीं है, तो फिर बच्चे नहीं बिगड़ेंगे। बेटे से एक ही बात कहनी है कि भाई, मुझसे भी बढ़-चढ़कर बनना, मैं जो करता हूँ उसमें। बेटे की इच्छा क्या होती है? कि मेरे बाप से बढ़-चढ़कर बनना है। हमें देखकर वह सीखता है कि ओहोहो! मेरे फादर तो कुछ भी... ब्रान्डी नहीं पीते, सिगरेट नहीं पीते, वह देखकर सीखता है। और यदि फादर ब्रान्डी पीता है और बेटे से कहता है, देख शराब मत छूना। तो बेटे को लगता है कि इसमें टेस्ट है और मुझे पीने नहीं देते। बेटे को शंका होती है कि खुद सुख भोग रहे हैं और मुझे भोगने नहीं दे रहे हैं। मैं तो पीऊँगा ही, यानी न पीने वाला हो फिर भी पीएगा। अतः हमें संस्कारी बनना चाहिए। हम इन्डियन ब्लड, हम आर्यप्रजा, अनाड़ी बनें, वह कैसे पुसाएगा?*

इस प्रकार, निरीक्षण करने से अगर आड़ाई सीखी जा सकती है तो निरीक्षण से सरलता भी सीख सकते हैं। हमें एक ही काम करना है कि सरल व्यक्तियों के संग में रहना है। संत, ज्ञानीपुरुष वगैरह...

सरप्राइज़

"सरप्राइज़", रोनित चौंक गया। अपने सामने मम्मी-पापा, रोहित, सूजय, विराज और मानव को देखकर, कॉलेज से आए हुए रोनित के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखाएँ उभर आई।

"सॉरी मम्मी-पापा, प्रोजेक्ट के काम से आज सुबह मुझे जल्दी कॉलेज जाना पड़ा और कल आप चाचा जी के घर से देर रात लौटे थे इसलिए आपको उठाया नहीं और आपसे मिले बगैर ही मुझे जाना पड़ा। और अभी आने में भी देर हो गई।" ऐसा कहते हुए रोनित ने मम्मी-पापा के चरण स्पर्श किए।

मम्मी ने रोनित के सिर पर प्रेम से हाथ फिराते हुए कहा, "सुबह से कुछ खाया, बेटा?" "आज तो बगैर खाए ही उसका पेट भर जाएगा" कहते हुए पापा ने रोनित की जेब में कुछ सरकाया। रोनित ने आश्चर्य से जेब में हाथ डाला, देखा तो... चाबी... तभी पापा ने पीछे के दरवाज़े की ओर इशारा किया। रोनित तुरंत दौड़कर पीछे गया। दरवाज़ा खोलकर देखते ही, "ओह! माय गोड...! रॉयल ऍन्फिलेड... क्या मैं सपना देख रहा हूँ?" रोनित ने बहुत खुश होते हुए कहा, "मम्मी-पापा, थेन्क यू वेरी मच!" फिर रोनित ने अपने जुड़वे भाई की ओर देखते हुए कहा, "रोहित, देखो... हमारा बाइक"।

"हमारा नहीं तेरा।" मेरे लिए तो यह रहा स्प्लेन्डॅर, रोहित ने गुस्से से कुछ दूर खड़े हुए बाइक की ओर उँगली निर्देष करते हुए कहा, "भैया, आप तो मम्मी-पापा के लाड़ले हो इसलिए आपके लिए "रोयल ऍन्फिलेड़", हमारे नसीब आप जैसे कहाँ?"

यह सुनकर मम्मी-पापा स्तब्ध रह गए। बहुत शांति से मम्मी ने रोहित से कहा, "बेटे, माँ-बाप के लिए सभी संतान समान होते हैं। पिछले महीने तुम दोनों के जन्म दिन पर एक जैसे बाइक दिलवाने थे लेकिन मंदी के कारण व्यापार से पैसे उठा नहीं पाए इसलिए थोड़े समय बाद देने का सोचा, लेकिन तुझे शायद ऐसा लगा कि बात टालने के लिए हम ऐसा कर रहे हैं। "जब तक बाइक नहीं दिलवाएँगे तब तक पानी की बूँद या अन्न का दाना, कुछ भी मुँह में नहीं रखूँगा", ऐसी धमकी तूने दी और तेरी ज़िद के सामने हमें झुकना पड़ा।

दूसरे बाइक के लिए राह देखनी पड़े ऐसा था इसलिए जो मिला वह सही, ऐसा सोचकर तूने स्प्लेन्डॅर पसंद किया और बड़ी मुश्किल से इंतज़ाम करके तुझे यह बाइक दिलवाया। इस दौरान रोनित ने अपने मुँह से एक अक्षर भी नहीं कहा। उसकी तरफ से हम निश्चिंत थे। पिछले हफ्ते व्यापार में अच्छा ऑर्डर मिला और पैसे की छूट हो गई। हम दोनों के मन में तो था ही कि रोनित का बाइक लेना बाकी है इसलिए हम बाइक देखने गए, हम दोनों को "रॉयल ऍन्फिलेड" बहुत पसंद आया। हाँ, कीमत थोड़ी ज्यादा थी लेकिन रोनित ने समय और संयोग दोनों को संभाला, हम बहुत खुश थे इसलिए उसके लिए यह बाइक लिया।"

यह सुनकर रोहित को खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था। अंदर से भार (बोझ) भी लग रहा था। वह बारी-बारी से दोनों बाइक को देख रहा था और मन ही मन पछता रहा था।

"अरे वाह रोहित... क्या बाइक है तेरा... क्या चॉइस (पसंद) है तेरी... कितना समझदार है तू... भाई कहना पड़ेगा।" कटाक्ष में हँसते-हँसते सुजीत ने कहा। रोहित के आड़ाई वाले स्वभाव को सब जानते थे। हर बात में टेढ़ा चलता, जबकि रोनित उससे बिल्कुल विपरीत था। बिल्कुल सरल... किसी चीज़ में हर्ज नहीं। सभी को प्यारा लगता। हमेशा प्रसन्न रहता। रोहित को दोस्त बनाने कोई तैयार नहीं था जबकि रोनित का मित्रों का बहुत बड़ा समुदाय था। लेकिन, रोनित अपने भाई के स्वभाव को नज़रअंदाज़ करके उसे हर जगह साथ ले जाता। सभी दोस्त मन ही मन खुश हो रहे थे कि "रोहित के साथ ऐसा ही होना चाहिए"। अब रोहित के मन में बहुत दुःख हो रहा था। अपनी पसंद की चीज़ अपने भाई के पास देखकर उसका जी जल रहा था। रोनित सब समझ गया था। उसने हँसते हुए कहा, "बाइक तो अच्छी ही है न... और समझदार भी है, है न! मम्मी-पापा के कितने पैसे बचाए। और ना तो स्पलेन्डर उसका है, ना ही ऍन्फिलेड मेरा, दोनों, हम दोनों के हैं। एक ही तरह के बाइक के बजाय अलग-अलग बाइक हों तो अच्छा है न, दोनों बाइक हम चला सकेंगे, क्यों भाई?" और यह सुनते ही रोहित के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, और वह रोनित के गले लग गया। अपनी सरलता की सुवास (खुशबू) से फिर से एक बार रोनित ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

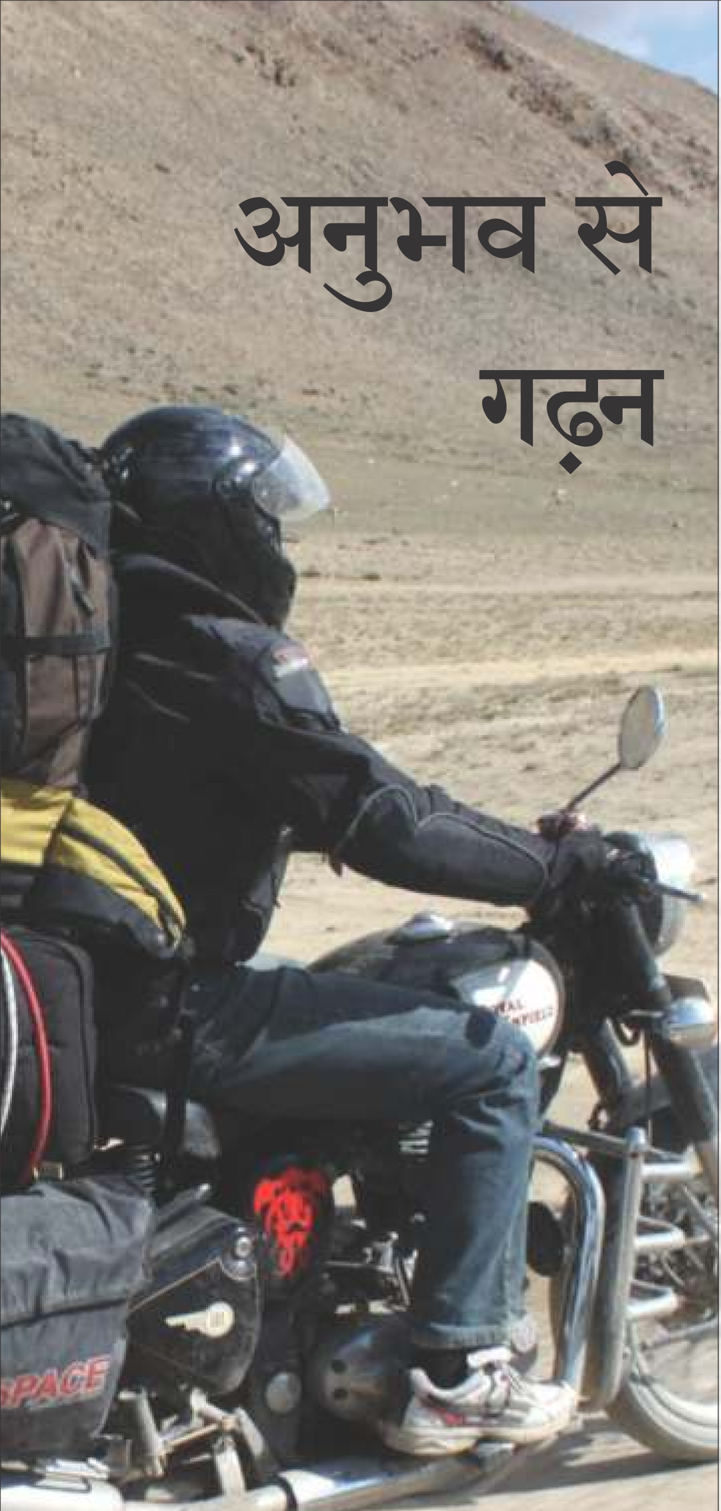

अनुभव से गढ़न

पिछले महीने मैं ट्रैकिंग के लिए लद्दाख गया था और वहाँ मुझे बहुत मज़ा आया। वहाँ के फोटो मैंने फेस बुक पर अपलोड किए थे। एक मल्हार के अलावा मेरे सभी दोस्तों ने फोटो के लिए बहुत सुंदर कॉमेन्ट्स दिए और लाइक्स भी भेजी। मल्हार ने बहुत ही खराब और अपमान जनक वाक्य लिखे थे।

वह पढ़कर मुझे गुस्सा आया और मेरे मन में हुआ कि मैं भी उसे जवाब दूँ। लेकिन मैंने सोचा, मल्हार ने ऐसा बर्ताव क्यों किया होगा? थोड़ी देर सोचने के बाद मुझे याद आया कि, सालों पहले, दिवाली के दिन हम सभी दोस्त मिलकर अपनी-अपनी गिफ्ट खोल रहे थे। विडियो गेम मिलने के कारण शुरुआत में तो मल्हार बहुत खुश था लेकिन मेरी प्ले स्टेशन की गिफ्ट देखते ही उसका मन खराब हो गया। पहली बार उसने मेरे लिए, मेरे परिवार के लिए, हमारी संपत्ति और इज़्ज़त के बारे में ऐसा-वैसा कुछ कहा। उसके लापरवाही भरे शब्द सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए।

लगभग एक हफ्ते बाद मल्हार ने मुझसे माफी माँगी, लेकिन मैं उसे माफ नहीं कर पाया, क्योंकि उसके कठोर शब्द मुझे तभी भी सुनाई दे रहे थे। फिर संवत्सरी के दिन मल्हार ने फिर से पश्चाताप के साथ माफी माँगी, मैंने उसे माफ कर दिया। हम पहले की तरह फिर से दोस्त बन गए। अब मेरी समझ में आ गया कि मैं जो भी मज़ें करता हूँ, वह सब करने की क्षमता मल्हार में नहीं है। इसलिए कभी-कभार वह रूखा बर्ताव करता है।

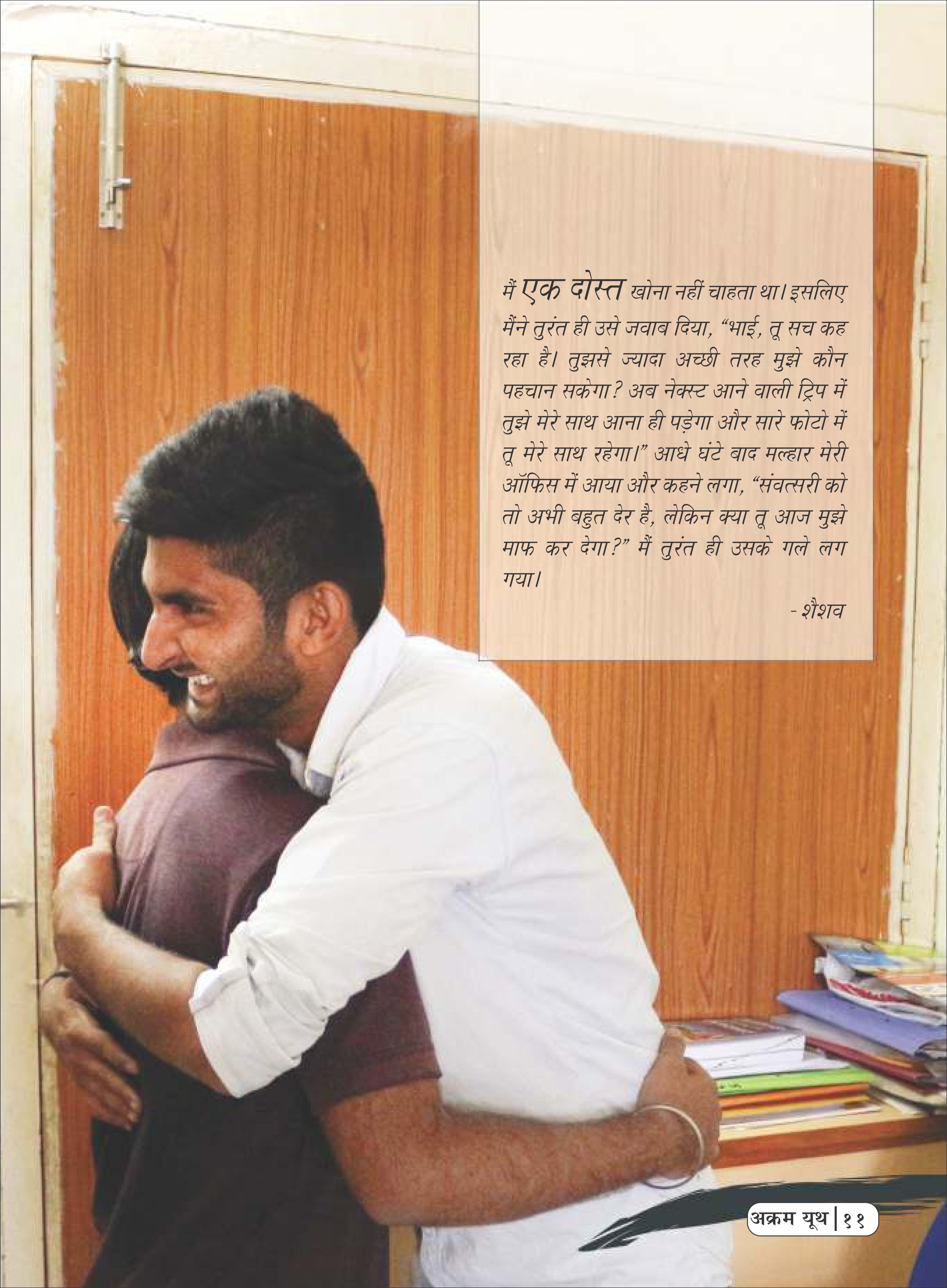

मैं **एक दोस्त** खोना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने तुरंत ही उसे जवाब दिया, "भाई, तू सच कह रहा है। तुझसे ज्यादा अच्छी तरह मुझे कौन पहचान सकेगा? अब नेक्स्ट आने वाली ट्रिप में तुझे मेरे साथ आना ही पड़ेगा और सारे फोटो में तू मेरे साथ रहेगा।" आधे घंटे बाद मल्हार मेरी ऑफिस में आया और कहने लगा, "संवत्सरी को तो अभी बहुत देर है, लेकिन क्या तू आज मुझे माफ कर देगा?" मैं तुरंत ही उसके गले लग गया।

- शैशव

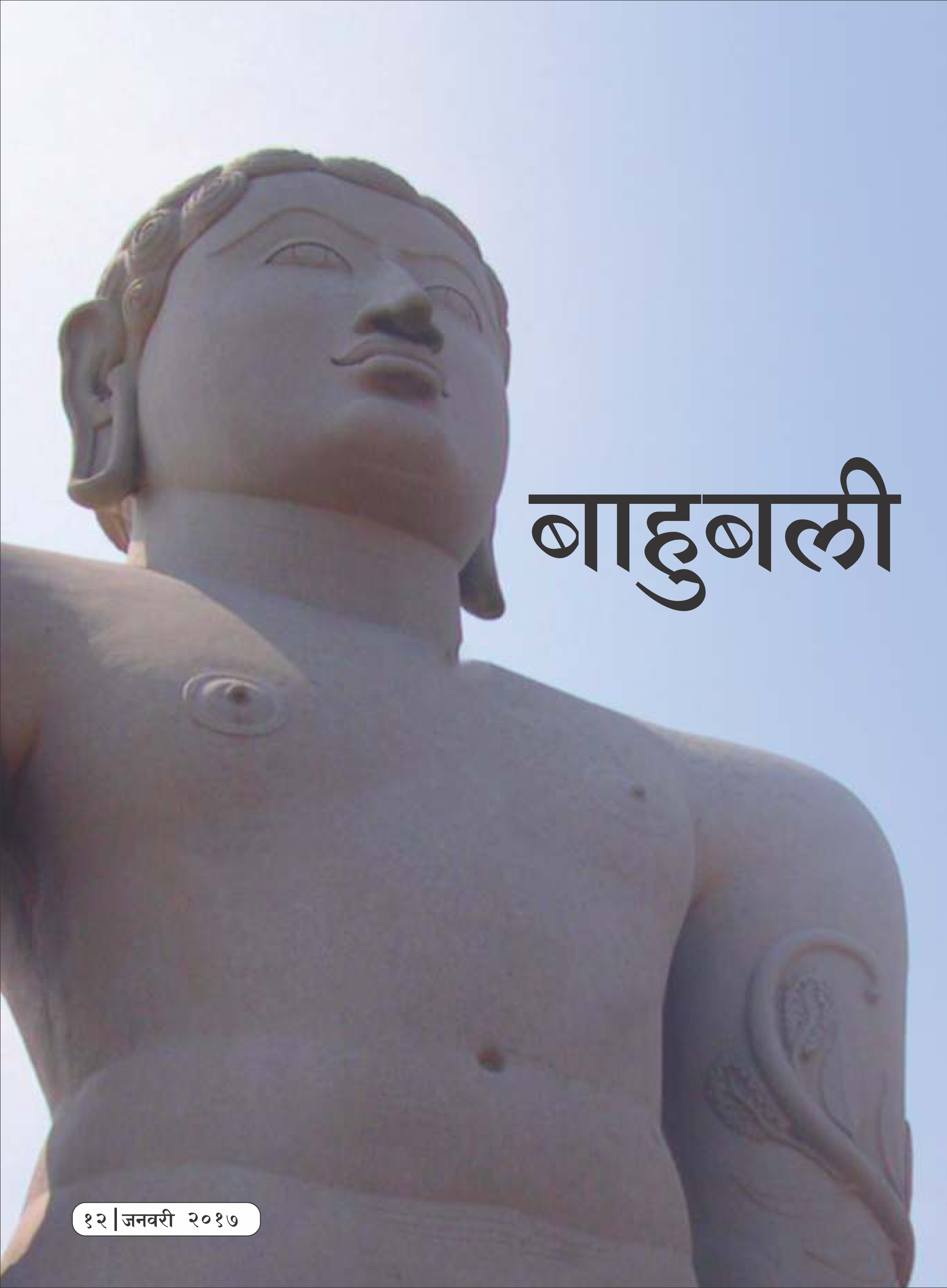

बाहुबली

बाहुबली भगवान ऋषभदेव के पुत्र थे। उनके ९८ भाइओं ने ऋषभदेव से दीक्षा ली थी। चक्रवर्ती बनने के लिए उन्होंने अपने भाई राजा भरत के साथ भयंकर लड़ाई की। बाहुबली जब जीत के करीब थे तब उन्हें अपनी गलती का ऐहसास होता है और उनके अंदर त्याग की तीव्र भावना उत्पन्न हुई। जो हाथ उन्होंने मारने के लिए उठाया था उसी से अपना केशलोचन करते हैं। उसके बाद जंगल में साधना करने चले जाते हैं।

दीक्षा लेने के बाद वे भी भगवान ऋषभदेव के साथ रहकर साधना करने का सोचते हैं। तभी उन्हें अपने ९८ भाई याद आते हैं। पिता के साथ उनके ९८ छोटे भाइओं ने भी दीक्षा ली थीं। अब दीक्षा में कैसा होता है कि जिन्होंने पहले दीक्षा ली हो वे भले ही उम्र में छोटे हों फिर भी दीक्षा के मार्ग में बड़े कहलाते हैं। यह याद आते ही उन्हें लगा कि यदि मैं उनके पास जाऊँगा तो मुझे रोज़ मेरे छोटे भाइओं के पैर छूने पड़ेंगे। बड़े होने के बावजूद भी मुझे उनके शिष्य की तरह रहना पड़ेगा। यह मुझसे नहीं होगा। मैं अपने आप साधना करके मोक्ष प्राप्त कर लूँगा, इस तरह से उनका अहंकार बाधक बनता है। अंदर मान खड़ा होता है, इस वजह से वे अपनी तरह से केवलज्ञान पाने के प्रयत्न करने का तय करते हैं और साधना के लिए जंगल में चले जाते हैं।

एक मात्र मोक्ष पाने की इच्छा से बाहुबली एक ही आसन में खड़े रहकर बहुत कठिन तप करते हैं। ठंड, धूप, भूख, प्यास, वेदना, मच्छर, जीव-जंतु के उपद्रव किसी की भी उन्हें पड़ी नहीं है। साल गुज़रते जा रहे हैं। अडिग खड़े हुए बाहुबली के पैरों पर आसपास उगी हुई बेलें चढ़ने लगती है। धीरे-धीरे उनके चेहरे को छोड़कर पूरे शरीर पर बेलें चढ़ गई, साँप ने घर बना दिए, फिर भी बाहुबली जी अडिग ही रहते हैं।

हज़ारों सालों के ऐसे कठिन तप के बाद भी उन्हें केवलज्ञान नहीं हुआ। ऋषभदेव भगवान तो केवलज्ञानी थे। उन्हें तो केवलज्ञान में सबकुछ दिखाई देता था। उन्होंने देखा कि मान और अहंकार के कारण ही बाहुबली का केवलज्ञान रुका है। भगवान तो बहुत करुणा वाले होते हैं। उन्होंने बाहुबली के कल्याण के लिए खटपट की। उन्होंने अपनी शिष्या ब्राह्मी और सुंदरी, जो बाहुबली की बहनें थीं, उन्हें बुलाकर उनके द्वारा बाहुबली के लिए एक संदेश भेजा।

ब्राह्मी और सुंदरी दोनों जंगल में जाती है। बाहुबली उसी अडिग और स्थिर मुद्रा में तप कर रहे हैं। दोनों बहनें भाई से कहती हैं, **''गज थकी हेठा उतरो रे वीरा, गज थये केवळ न होय''**(गज से नीचे उतरो वीर, गज पर चढ़कर केवलज्ञान नहीं मिलता)। ध्यान में खड़े बाहुबली को अपनी बहनों की इस बात को सुनकर आश्चर्य होता है। उन्हें लगता है कि बहनें यह क्या कह रही है? मैं कहाँ हाथी पर बैठा हूँ? मैं तो मुनि अवस्था में हूँ और तप कर रहा हूँ। लेकिन बहनें यों ही नहीं कहेंगी, उनके कहने में ज़रूर कोई रहस्य छिपा हुआ है। सोचते हुए कुछ ही क्षणों में उनकी समझ में आ जाता है कि बहनों की बात सही है। मैं मानरूपी गज, यानी हाथी पर बैठा हूँ। भाइओं के सामने नहीं झुकूँगा, वह मान ही कहलाएगा न? खुद मोक्ष प्राप्त कर लूँगा, वह भी अहंकार ही कहलाएगा न? मान के साथ कभी भी मोक्ष नहीं हो सकता। उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है और बहुत पछतावा होता है। वे तुरंत ही ऋषभदेव भगवान के पास जाने का और अपने छोटे भाइओं को वंदन करने का तय करते हैं। तय करके जैसे ही जाने के लिए वे कदम उठाते हैं, कि तभी उन्हें केवलज्ञान हो जाता है।

दादा श्री के पुस्तक की झांकी

Download free ebook version
of above book
by scanning this QR code

Visit
https://goo.gl/w6tcj1

You need to download
QR Code Scanner App
from Play store
or iTunes Store

प्रश्नकर्ता : आड़ाइयाँ क्यों नहीं जातीं?

दादाश्री : कैसे जाएँगी लेकिन? बहुत दिनों से मुकाम किया हुआ है और फिर किराए का नियम है, एकबार घुसने के बाद निकलता नहीं है। जो यहाँ रहने आ चुकी हैं, फिर वे आड़ाइयाँ जाएँगी क्या?

मैंने एक व्यक्ति से कहा, "इतनी आड़ाइयाँ क्यों करते हो? आड़ाई कुछ कम करो न?" तब उसने कहा, "दुनिया में आड़ाई के बिना तो चलता ही नहीं"। तब मैंने कहा कि, "साँप को भी बिल में घुसते समय सीधा होना पड़ता है। यदि मोक्ष में जाना है तो सीधे हो जाओ न! वर्ना लोग सीधा कर देंगे, उसके बाद मोक्ष में जा सकोगे। इसके बजाय खुद ही सीधे हो जाओ न!" लोग तो मार मारकर सीधा करते हैं, इसके बजाय खुद सीधे हो जाएँ, तो उसमें गलत क्या है? इसलिए खुद ही सीधे हो जाओ। लोग मार-मारकर सीधा करते हैं या नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : दादा, सामने वाला व्यक्ति टेढ़ा दिखे वह भी खुद की ही आड़ाई न?

दादाश्री : वही सब से बड़ी आड़ाई है न!

प्रश्नकर्ता : मतलब खुद की ही सारी आड़ाइयाँ देखनी है?

दादाश्री : तो और किसकी? किसी और से कहने जाओ तो उल्टा आपसे झगड़ा करेगा।

प्रश्नकर्ता : आड़ाइयों का भी कई बार हमें पता ही नहीं चलता। वह हमें सीधापन ही लगता है।

दादाश्री : उसका पता नहीं चलता। वह तो अंदर गहराई में उतरना पड़ता है। आड़ाइयों को देखने के लिए निष्पक्षपाती रुख रखना पड़ता है।

कोई आपसे कहे कि, "आड़ाई क्यों कर रहे हो?" तब आप कहते हो, "देखो न, मूर्ख है न! मैं आड़ाई कर रहा हूँ या वह कर रहा है?" सामने वाला बल्कि हमें अपनी आड़ाइयों की जाँच करने के लिए

कह रहा है, तो अंदर जाँच करो। ये तो ऐसा है आप अपनी आड़ाइयों की जाँच तो नहीं करते, बल्कि आप उसमें आड़ाइयाँ ढूँढते हो। मुझे कोई क्यों नहीं कहता कि आप आड़ाई क्यों कर रहे हो?! अब यदि मुझमें आड़ाइयाँ देखे, तो वह कहे बगैर रहेगा ही नहीं। जगत् तो जैसा देखता है, वैसा ही कहता है।

आड़ाई का स्वरूप

प्रश्नकर्ता : आड़ाई का स्वरूप किसे समझें?

दादाश्री : दिल को ठंडक हो, ऐसी बात हो फिर भी स्वीकार नहीं करता, खुद के ही मत से चलता है। हम किसी से कुछ भी नहीं कहते, दबाव नहीं डालते, फिर भी यदि किसी से कुछ कहें और यदि कभी वह नहीं माने तो उसे आड़ाई ही कहेंगे न? खुद के मत से ही चलना है न? या "ज्ञानी" की आज्ञा से चलना है?

प्रश्नकर्ता : वास्तव में "ज्ञानी" की आज्ञा से ही चलना है।

दादाश्री : सब आड़ाइयाँ ही हैं। सभी जगह, जहाँ देखो वहाँ आड़ाई से ही सबकुछ खड़ा है न! सिर्फ हममें ही आड़ाई नहीं होती। हम आड़ाई-शून्य हो चुके हैं। कोई दबाव डाले कि, "आपको यह काम करना ही पड़ेगा। नहीं तो हम सब उपवास करेंगे।" दुःखी हो रहे हों तो हम कहेंगे कि, "ले भाई, कर लेते हैं। लेकिन तुम उपवास मत करना।"

प्रश्नकर्ता : वह आड़ाई नहीं कहलाएगी?

दादाश्री : नहीं। आड़ाई इसे कहेंगे कि "हम उपवास करेंगे।" यहीं पर पूरा जगत् फँसा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : और जब आप कहें, तब उस समय वैसा नहीं करना, उसे आड़ाई कहेंगे?

दादाश्री : आड़ाई ही कहेंगे न! तब और क्या? "दादा जी" भला ऐसा कभी कहेंगे कि ऐसे कर लाओ? कुछ अपने हित का होगा तभी कहेंगे न! इसलिए वहाँ पर आड़ाई नहीं करनी चाहिए।

समझने से सरलता

आपने आड़ाई देखी है किसी में? लोगों में वह आड़ाई होती है, ऐसा देखा है?

प्रश्नकर्ता : मुझमें खुद में ही थी न, दादा। अत्यंत टेढ़ा था मैं।

दादाश्री : ऐसा? जो टेढ़ा था, उसे भी "खुद" जानता है! क्योंकि जानने वाला अलग है न! या फिर जो टेढ़ा है वही जानने वाला है? नहीं, जो टेढ़ा है वह जानने वाला नहीं है। इसमें जानने वाला अलग है, जानने वाला "खुद" है। फिर आपकी सारी आड़ाइयाँ चली गईं, नहीं?

प्रश्नकर्ता : अभी भी हैं दादा।

दादाश्री : तो सीधा होना पड़ेगा। आड़ाई तो नहीं चलेगी। यदि अपने इस "ज्ञान" से सीधे नहीं होओगे, तो लोग मार-पीटकर सीधा कर देंगे। इसके बजाय आप समझदारी से ही सीधे हो जाओ, तो फिर झंझट ही खत्म हो जाएगी न! जब दखलंदाज़ी करते हैं न, तो हमेशा ही धाड़ से लगती है। यानी कि वह उसे सीधा ही करती जाती है। दखलंदाज़ी ही सीधा करती है। उस आड़ाई के सभी सींग यहाँ पर टूट जाएँगे, तो सब ठीक हो जाएगा! वे सभी आड़ाइयाँ पाशवता जैसी होती हैं। दो भले लोग कहें कि, "अरे भाई, हमारी बात मान ले न!" तब वह क्या कहेगा? "नहीं, मैं यह नहीं मान सकता।" वह अपनी आड़ाई हमारे सामने खोल देता है। जब यह आड़ाई जाएगी, तब मोक्ष होगा।

एक प्रयोग

अब हम एक प्रयोग करेंगे.....

प्रयोग के लिए चीज़ें :
२ बोतल,
१ बर्फ का पट्ट,
थोड़ा सा पानी,
१ गैस (स्टव),
१ पतीली,
१ हथौड़ी,
१ बर्फ घिसने का औज़ार (छैनी)।

पद्धति :

१) १ बोतल में बर्फ की पट्ट भरो।

१.१) बर्फ की पट्ट को पतीली में डालकर गैस पर गरम करके उस पानी को बोतल में भरो।

या

१.२) बर्फ की पट्ट के हथौड़ी से छोटे-छोटे टुकड़े करके, बोतल में भरो।

या

१.३) बर्फ की पट्ट को घिसकर बोतल में भरो।

या

१.४) बर्फ की पट्ट को पतीली में रखकर घंटों तक रहने दो, जब पीघल जाए तब उस पानी को बोतल में भरो।

२) दूसरी बोतल में पानी भर दो।

निरीक्षण :

पहली बोतल में बर्फ की पट्ट भरने के लिए क्रियाएँ करनी पड़ी। जबकि दूसरी बोतल में आसानी से पानी भर दिया, उस पर कोई विशेष क्रिया नहीं करनी पड़ी।

तारण :

बर्फ "जड़" है जबकि पानी "सरल" है।

भौतिक विज्ञान :

जड़ चीज़ या व्यक्तियों के स्वरूप में परिवर्तन लाने के लिए, उन पर अलग-अलग प्रक्रियाएँ की जाती हैं, जबकि सरल चीज़ या व्यक्ति को जैसा है वैसा स्वीकार लिया जाता है।

कुदरती सौंदर्य शब्द सुनते ही आँखों के सामने पर्वत, बादल, नदी, पेड़, फूल वगैरह आ जाते हैं और अगर किसी कुदरती सौंदर्य वाली जगह पर जाना हो तो, कोई नदी का तट पसंद करेगा या फिर समुद्र का तट या किसी पहाड़ों के बीच से बहने वाले झरने को या पानी के प्रपात को देखने का सोचेगा। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि सभी को पानी देखना क्यों पसंद आता है? क्योंकि हर आकार में ढल जाना और संकरी जगह से भी अपना मार्ग बनाकर निकल जाने का उसका गुणधर्म है। पानी सरलता का उत्कृष्ट उदाहरण है। जैसे कि पानी मटके में भरा है तो उसे बोतल या ग्लास या पतीली में भरने के लिए, उस पर कोई विशेष क्रिया करने की ज़रूरत नहीं है, वह सरलता से अन्य आकार में ढल जाता है। उसी तरह सरल व्यक्ति भी किसी भी परिस्थिति में आसानी से एडजस्ट हो जाता है। व्यक्ति का दिखावा नहीं बल्कि उसकी सरलता उसे सुंदर बनाती है।

आध्यात्मिक विज्ञान :

हम हमारे जीवन में कई बार बर्फ जैसे बन जाते हैं और सरलता के बजाय हम में आड़ाई आ जाती है। हम अगर याद करें तो इस वजह से कई बार हमें अपशब्द सुनने पड़े होंगे, मार खाया होगा, बोझ रहा होगा, पछतावा हुआ होगा। लेकिन ऐसा हुआ क्यों? तो उसका जवाब पानी-बर्फ के उदाहरण में है।

दादा श्री कहते हैं कि, “अगर खुद सीधे नहीं बनोगे, तो दुनिया मार-मारकर सीधा कर देगी”।

तो चलो, अपने अंदर सरलता का गुण विकसित करें और सभी के प्रिय बनें।

आड़ाई की व्याख्या

प्रश्नकर्ता : आड़ाई अर्थात् क्या?

दादाश्री : आड़ाई यानी यदि रात को किसी से तकरार हो जाए और सुबह वह बात करने आए तब भी हम बात नहीं करें। कहेगा, "तेरे साथ बात नहीं करूँगा", वह फिर टेढ़ा बनता है। अरे भाई, रात बीती बात गई। कल शनिवार था, आज तो रविवार है, लेकिन शनिवार की बात रविवार तक पकड़कर रखे वह आड़ाई।

यदि जगत् में आड़ाई के सामने आड़ाई रखोगे तो हल नहीं आएगा। आड़ाई के सामने सरलता से हल आएगा।

फिर गलती का पता नहीं हो और उसे छिपाएँ, वह बात अलग है। लेकिन गलती का पता हो और उसे छिपाएँ या रक्षण करें तो वह सब से बड़ी आड़ाई। उदाहरण के तौर पर, आपके दोस्त के साथ आपका झगड़ा हुआ और आपने उसे मारा तो आपको मन में तो ऐसा होगा कि यह गलत हो गया। लेकिन कोई पूछे कि क्यों मारा, तो आप कहो कि उसे तो मारना ही चाहिए, वह आड़ाई।

सामने वाले की बात सही हो फिर भी न माने और अपने मत के अनुसार ही चले, उसे आड़ाई कहते हैं।

आड़ाई के सामने आड़ाई करने के परिणाम स्वरूप आफतें आती हैं।

महाभारत के अंश :

१) पांडवों द्वारा बनाए गए नए महल के एक कमरे में पानी के बजाय चमकती हुई फर्श दिखाई दे ऐसी कारीगरी की गई थी। इस कमरे में पानी नहीं देख पाने के कारण दुर्योधन फिसल गया। यह देखकर झरोखे में

बैठी हुई द्रौपदी ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा, "अंधे के (पुत्र) अंधे ही होते हैं।" यह बात दुर्योधन को बहुत अपमानजनक लगी। - द्रौपदी की आड़ाई

२) इस अपमान को दुर्योधन भूल नहीं पाया और उसने द्युत क्रीडा (शतरंज, जुए का खेल) का आयोजन किया, जिसे वे ही जीत सकें ऐसा प्रबंध किया था। इस खेल में पांडव हार गए इसलिए द्रौपदी को बाल खींचते हुए कौरवों की राजसभा में लाया गया और उसके चीरहरण का प्रयत्न किया गया। - दुर्योधन की आड़ाई

३) इस घटना के बाद पांडवों ने बदला लेने का निश्चय किया। -पांडवों की आड़ाई

४) दुर्योधन ने पांडवों के रहने के लिए सिर्फ पाँच गाँव देने से भी इन्कार किया। - दुर्योधन की आड़ाई

इसके परिणाम स्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ। दुश्मनों का नाश हुआ, लेकिन दुश्मनी रह गई।

जैसे मोड़े वैसे मुड़ जाए उसे सरल कहते हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर एक बार कहा हो कि किसी की चीज़ पूछे बगैर नहीं लेनी चाहिए तो हमेशा पूछकर ही ले, उसे सरल कहते हैं।

॥ रामायण ॥

रामायण के अंश :

१) दशरथ राजा की तीनों रानियों ने राम को अपने पुत्र की तरह बड़ा किया था। जब राम युवा हो गए तब पूरी अयोध्या नगरी ने उन्हें राजा के तौर पर स्वीकार किया और उनके राज्याभिषेक का दिन तय हुआ। लेकिन मंथरा नाम की दासी के उकसाने की वजह से, कैकयी ने राजा दशरथ के सामने शर्तें रखीं कि राम का राज्याभिषेक न किया जाए और वे चौदह साल के लिए वन में चले जाएँ। - कैकयी की आड़ाई

२) राजा दशरथ ने सालों पहले अपना जीवन बचाने की वजह से कैकयी को वचन दिया था। इसी वचन की वजह से कैकयी की शर्तों को मानना पड़ा, अतः उन्होंने अपने अति प्रिय आज्ञांकित पुत्र को वन में जाने को कहा। - राजा दशरथ की सरलता

३) राम ने विनम्रता से पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी पत्नी सीता और लक्ष्मण के साथ वन में चले गए। फिर भी उनके मन में कैकयी के प्रति ज़रा सा भी द्वेष या नापसंदगी नहीं थी, जबकि जैसा प्रेम और विनय इस घटना के पहले था, वैसा ही कायम रहा। - राम की सरलता

४) समय बीतने के बाद, कैकयी को अपनी भूल का एहसास होता है और हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करती है, ताकि वैमनस्य की संभावना न रहे। - सरल बनने के कारण कैकयी में आया परिवर्तन

आड़ाई के सामने सरलता रखने से आफत टल जाती है।

चलो खेलें... कषाय शुटर

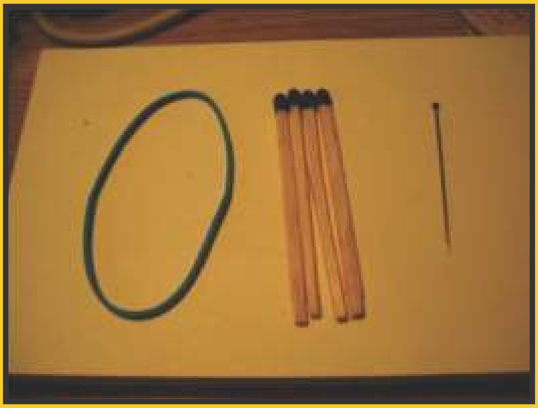

स्टेप १ : घटक

४- दियासलाई,

१- रबरबैन्ड,

१- आलपीन

१- ३" × ३" का कागज़

स्टेप २ : चित्र के अनुसार कागज़ फोल्ड करो।

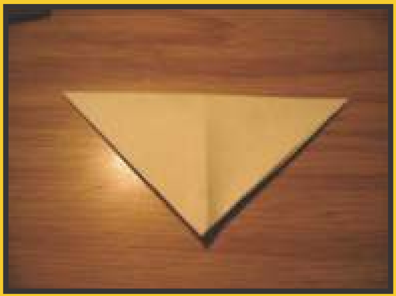

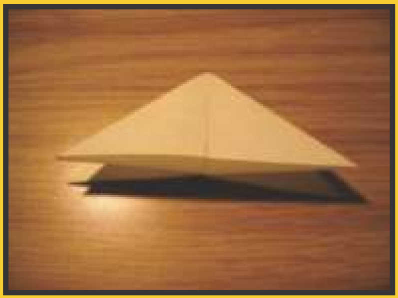

स्टेप ३ : आलपीन लगाओ।

पीन को कागज़ पर लगा दो। पीन, तीर की चोटी पर रखो। पीन की लंबाई, दियासलाई की लंबाई के अनुसार रखनी है। नीचे दिए गए चित्र के अनुसार।

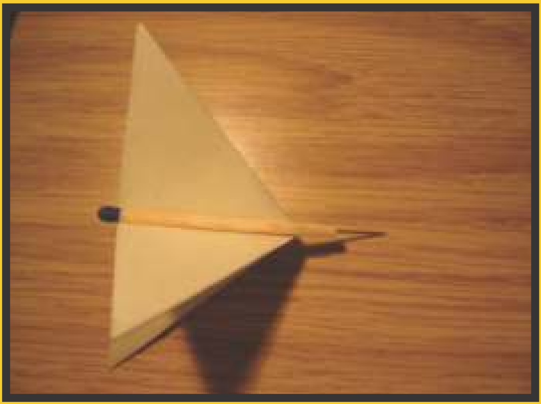

स्टेप ४ : कागज़ के चारों फोल्ड पर दियासलाई रखो। उन्हें एक साथ रखना है।

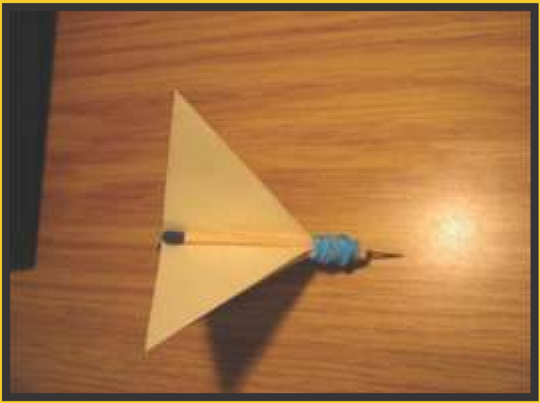

स्टेप ५ : रबरबैन्ड का इस्तेमाल करो।

चारों दियासलाइयों को रबरबेंड से बाँध दो। रबरबैन्ड को कसकर दियासलाई पर बाँध दो।

कषाय - क्रोध - लोभ - कपट... लिखे हुए गुब्बारों को फोड़ो - और उसके लिए आपके घर पर बनाए हुए तीर का इस्तेमाल करें।

विविध परिस्थितियों में होने वाली आड़ाई

१) जब मैं छोटा था तब मम्मी घर का काम सौंपकर जातीं और वापस आतीं तब उनकी मर्ज़ी के मुताबिक काम नहीं हुआ हो तो वे गुस्सा करती और मैं "इतना काम किया फिर भी गुस्सा करती हो", ऐसा कहकर रुठ जाता और खाना खाने से मना करके उन्हें और तंग करता।

२) मैं अगर मेरी दोस्त को सलाह दूँ और वह मेरा कहा न माने या ऐसा कहे कि, "ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं चलेगा", तो मैं उसके साथ बोलना बंद कर दूँगी।

३) जब मुझे छुट्टी चाहिए तब बॉस छुट्टी न दे तब मुझसे निष्ठापूर्वक काम नहीं हो पाता।

२

४) हमसे छोटा भाई या बहन हों और हमारा बहुत काम करते हों और कभी अगर वे मना कर दें तो उन पर गुस्सा आ जाए और उन्हें डाँट दें, और जब उन्हें मदद की ज़रूरत हो तब न करें।

आड़ाई से होने वाले नुकसान

१) आड़ाई से मानसिक तनाव बढ़ जाता है और अंदर हमें बेचैनी और दुःख उत्पन्न होने लगता है। और आमने-सामने दोनों को एक-दूसरे पर अभाव हो जाता है। फिर विश्वास व प्रेम कम होता जाता है।

२) कभी-कभार अच्छी चीज़ हो तो भी दिमाग के दरवाज़े बंद कर दिए हों तो जो प्राप्त करना हो वह भी गँवा देते हैं।

आड़ाई से सिर्फ नुकसान ही होगा, फायदा नहीं।

आप आड़ाई के वक्त क्या उपाय करते हैं?
आड़ाई के सामने लड़ने के उपाय और उसके अनुभव नीचे दिए गए कोई भी माध्यम से पहुँचाए...

Email - akramyouth@dadabhagwan.org
Facebook - http://facebook.com/akramyouth.mag
Twitter - @AkramYouth

जनवरी २०१७
वर्ष : ४, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ४५
अक्रम यूथ

Monthly Youth Magazine
SUBSCRIPTION
40% One Year OFFER
Price : ₹ ~~125~~
You pay : ₹ 75

Monthly Youth Magazine
SUBSCRIPTION
52% Five Year OFFER
Price : ₹ ~~625~~
You pay : ₹ 300

Offer Valid till
28 February 2017

Akram Youth Subscription Form

Full Name : ____________________
Address : ____________________
City : ________ State : ________ Country : ________
Pincode : ________ Phone : ________
E-Mail : ________________ Date of Birth : __/__/____ dd/mm/yyyy
Gujarati ☐ English ☐

1 Year	₹ ~~125~~	₹ 75	☐
5 Year	₹ ~~500~~	₹ 300	☐

D.D/M.O. should be in favour of **'Mahavideh Foundation'**, payable at Ahmedabad.

Please enclose payment or pay by credit card online at :
store.dadabhagwan.org/akram-youth

Send this form and enclosed payment to

Akram Youth
'Dada Darshan', 5, Mamta Park Society, B/h. Navgujarat college, Usmanpura, Ahmedabad - 380 014, Gujarat, India.

We would love to hear from you.
Send us your feedback and suggestions.
Email: **akramyouth@dadabhagwan.org**

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।

मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग १४ से प्रकाशित की गई है।

Dada's Youth Network